सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ का किरदार व फ़रामीन

28-February-2019

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला

सुन्नतों भरा बयान

(For Islamic Sisters)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हदीसे पाक की मशहूर किताब **"तिर्मिज़ी शरीफ़"** में है : अपने उम्मतियों से बहुत प्यार फ़रमाने वाले प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : اَوْلَی النَّاسِ بِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ اَکْثَرُھُمْ عَلَیَّ صَلَاۃً क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा, जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा। (ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ...الخ، ۲/ ۲۷، حدیث: ۴۸۴)

हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہ عَلَیْہ इस हदीसे पाक के तहत इरशाद फ़रमाते हैं : क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा, जो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के साथ रहे और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की हमराही (या'नी सोहबत) नसीब होने का ज़रीआ दुरूद शरीफ़ की कसरत है। इस से मा'लूम हुवा ! दुरूद शरीफ़ बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस से बज़्मे जन्नत के दुल्हा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (मिलते हैं)।

(मिरआतुल मनाजीह, 2 / 100)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/ ۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

मदनी फूल :- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़अ की मुनासबत और नौइय्यत के ए'तिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान

सुनूंगी । ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी । ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी । ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी । ❖ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْبِ، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । ❖ इजतिमाअ़ के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ (कि इस की इजाज़त नहीं) । जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बा'द में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दा'वत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! आज के बयान में हम यारे ग़ार व यारे मज़ार, आ़शिक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه के पाकीज़ा किरदार की चन्द झल्कियां और आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के मुबारक फ़रामीन सुनती हैं । पहले एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये । चुनान्चे,

मेरे मह़बूब का क्या ह़ाल है ?

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : आग़ाज़े इस्लाम में जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِيْن की ता'दाद 38 हो गई, तो अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه ने **अल्लाह** पाक की रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से खुल कर इस्लाम का इज़्हार करने की इजाज़त त़लब की । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! हम अभी ता'दाद में कम हैं । मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه मुसल्सल इसरार फ़रमाते रहे यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इज़्हारे इस्लाम की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी । मुसलमान मस्जिदे ह़राम के आस पास के

अ़लाक़े में फैल गए, हर शख़्स अपने ख़ानदान को इस्लाम की दा'वत पेश करने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ लोगों को इस्लाम की दा'वत देने के लिये खड़े हुवे और वहां हर ऐ़ब से पाक आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ फ़रमा थे। मुश्रिकीने मक्का ने जब मुसलमानों को खुल्लम खुल्ला इस्लाम की दा'वत देते देखा, तो उन का ख़ून खौल उठा और उन्हों ने मुसलमानों को मारना शुरूअ़ कर दिया। अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को भी मारा, यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बेहोश हो गए। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के क़बीले बनू तैम के लोगों को पता चला, तो वोह दौड़ते हुवे आए और आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को घर ले गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के वालिद अबू क़ुह़ाफ़ा और बनू तैम के लोग बहुत परेशान थे, मुसल्सल आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से गुफ़्तगू करने की कोशिश कर रहे थे, बिल आख़िर दिन के आख़िरी ह़िस्से में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को होश आ गया। जब उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़बान से सब से पहला जुम्ला येह निकला कि **अल्लाह** पाक के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस ह़ाल में हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की येह बात सुन कर क़बीले के कई लोग नाराज़ हो कर चले गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की वालिदा, उम्मुल ख़ैर सलमा जब कुछ खाने, पीने के लिये कहतीं, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सिर्फ़ एक ही जुम्ला कहते : **अल्लाह** पाक के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस ह़ाल में हैं ? मुझे सिर्फ़ उन की ख़बर दो। येह ह़ालत देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की वालिदा कहने लगीं : **अल्लाह** पाक की क़सम ! मुझे आप के दोस्त की ख़बर नहीं कि वोह किस ह़ाल में हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : आप उम्मे जमील बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के पास चली जाएं और उन से रह़मत बन कर तशरीफ़ लाने वाले आक़ा, ग़म के मारों को सीने से लगाने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में सुवाल करें। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की वालिदा, उम्मे जमील बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के पास आईं और कहा कि मेरा बेटा अबू बक्र आप से अपने दोस्त मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में पूछ रहा है कि वोह कैसे हैं ? ह़ज़रते उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने इस सुवाल का जवाब देने के बजाए कहा : अगर आप चाहें तो मैं

आप के साथ आप के बेटे के पास चलती हूं। दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास पहुंचीं, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उन से येही पूछा कि अल्लाह पाक के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم किस ह़ाल में हैं ? तो ह़ज़रते उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने बताया : सय्यिदा फ़ाति़मा के बाबा, इमामे ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के नाना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم मह़फ़ूज़ और बिल्कुल ख़ैरिय्यत से हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पूछा : उम्मतियों के ह़ाल की ख़बर रखने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم इस वक़्त कहां हैं ? उन्हों ने जवाब दिया : दारे अरक़म में तशरीफ़ फ़रमा हैं। फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं उस वक़्त तक न कुछ खाऊंगा और न पियूंगा जब तक बे सुकूनों को सुकून बख़्शने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم को ब ज़ाते ख़ुद न देख लूं। बहर ह़ाल जब सब लोग चले गए, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की वालिदा और उम्मे जमील बिन्ते ख़त्ता़ब, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बारगाहे रिसालत में ले गईं। जब उम्मतियों पर मेहरबानियां फ़रमाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस सच्चे आ़शिक़ को देखा, तो आंखों में आंसू आ गए और आगे बढ़ कर उन्हें थाम लिया, उन के बोसे लेने लगे। येह मुआ़मला देख कर तमाम मुसलमान भी आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की त़रफ़ बढ़े। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ज़ख़्मी देख कर अपनी उम्मत के ग़म में आंसू बहाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم पर बड़ी रिक़्क़त ता़री हुई। अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! मैं ठीक हूं, बस चेहरा थोड़ा ज़ख़्मी हो गया है। जिस दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को तकालीफ़ दी गईं, उसी रोज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की वालिदा, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुल ख़ैर सलमा और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا भी इस्लाम ले आए थे।

(تاریخ مدینہ دمشق، ۳۰/۴۹، البدایۃ والنہایۃ، ۲/۳۶۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इश्क़े रसूल में डूब कर दीने इस्लाम की तब्लीग़ के लिये किस क़दर आज़माइशें बरदाश्त कीं। इस्लाम के इस अ़ज़ीम मुबल्लिग़ ने अपना सब कुछ अल्लाह करीम और अल्लाह

पाक की रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में कुरबान कर दिया, इस क़दर तक्लीफ़ें और मुसीबतें पहुंचने के बा'द भी अपनी फ़िक्र छोड़ कर अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को याद कर रहे हैं और बे क़रार हैं कि किसी त़रह़ मुझे अपना कुर्ब बख़्शने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़ाल मा'लूम हो जाए कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी परेशानी में तो नहीं । ज़रा ग़ौर फ़रमाइये ! हर ऐ़ब से पाक आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जा निसार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इ़श्क़ो मह़ब्बत का तो येह आ़लम था । आइये ! हम भी ग़ौर करती हैं कि उम्मत के ग़म में आंसू बहाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हम कैसी मह़ब्बत करती हैं ? क्या हमारे अन्दर भी इस्लाम की ख़ात़िर कुरबानी देने का जज़्बा मौजूद है ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن तो जानो माल की कुरबानी देने से भी नहीं घबराते थे लेकिन अफ़्सोस ! हम से सिर्फ़ वक़्त की कुरबानी भी नहीं दी जाती ।

याद रखिये ! जो दीने इस्लाम की मदद करता है, **अल्लाह** पाक उस की मदद फ़रमाता है । जैसा कि पारह 17, सूरतुल ह़ज की आयत नम्बर 40 में इरशाद होता है **:**

وَ لَیَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ یَّنْصُرُهٗ ؕ

(پ۱۷،حج:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : *और बेशक **अल्लाह** उस की ज़रूर मदद फ़रमाएगा जो उस के दीन की मदद करेगा ।*

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** करीम उस की मदद फ़रमाएगा जो उस के दीन की मदद करेगा । ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं **: अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस की मदद करे जो उस (के दीन) की मदद करे । (تفسیر درمنثور، ۷/۵۶۲)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہ عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं **:** नबी की ख़िदमत, इ़ल्मे दीन फैलाना, सब **अल्लाह** (पाक) के दीन की मदद है । (नूरुल इ़रफ़ान, पा. 17, ह़ज, तह़्तुल आयत **:** 40, स. 537)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी अल्लाह करीम की रिज़ा ह़ासिल करने की निय्यत से दीने इस्लाम के पैग़ाम को आ़म करने का जज़्बा अपने अन्दर पैदा करें। दीने ख़ुदा की मदद करने वालों की मदद कैसे होती है ? उन की मदद कौन करता है ? उन को कैसी साबित क़दमी नसीब होती है ? आइये ! सुनती हैं। चुनान्चे, पारह 26, सूरए मुह़म्मद की आयत नम्बर 7 में इरशाद होता है :

يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝

(پ۲۶، محمد:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे, तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमाएगा।

दीने मुस्त़फ़ा की मदद करने वालों के लिये दुआ़एं तो बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن सदियों से देते चले आ रहे हैं। येह दुआ़ आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने भी **"ख़ुत्बाते रज़विय्या"** में शामिल फ़रमाई है। वोह दुआ़ येह है : اَللّٰهُمَّ انْصُرْ مَنْ نَّصَرَ دِيْنَ سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّد ऐ अल्लाह पाक ! जो हमारे आक़ा और मौला, मुह़म्मदे मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन की मदद करे, तू भी उस की मदद फ़रमा।

ऐ दीने मुस्त़फ़ा से मह़ब्बत का दम भरने वालियो ! यक़ीनन रब्बे करीम की मदद जिस के शामिले ह़ाल हो जाए, उस का दोनों जहानों में बेड़ा पार है। अल्लाह पाक की मदद से बड़ी बड़ी मुसीबतें टल जाती होंगी और हमें इस की ख़बर तक नहीं होती होगी। दुआ़ के बा'द कुछ और भी है और वोह येह है : وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَ دِيْنَ سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّد ऐ अल्लाह पाक ! जो हमारे आक़ा और मौला, मुह़म्मदे मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन की मदद न करे, तू भी उस की मदद न फ़रमा।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! डर जाने का मक़ाम है ! अल्लाह पाक जिस की मदद न फ़रमाएगा, यक़ीनन वोह कहीं का न रहेगा। हम में से हर एक को चाहिये कि ग़ौर करे कि वोह अपने लिये दुआ़ ले रही है या

बद दुआ ! हर वोह काम दीने मुस्त़फ़ा की मदद है जिस से इस्लाम फैले, ग़ैर मुस्लिम इस्लाम में दाखि़ल हों और बिगड़े हुवे मुसलमानों की इस्लाह़ हो । बस नेकी की दा'वत की ख़ूब धूमें मचाइये, ख़ुद भी दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाआ़त में शिर्कत कीजिये, दूसरी इस्लामी बहनों को भी इस की दा'वत दीजिये, ख़ुद भी सुन्नतें सीखये और दूसरों को भी सिखाइये और यूं दीने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा की ख़ूब ख़ूब मदद कर के **अल्लाह** पाक की इमदाद की ख़ुश ख़बरी पाइये कि ख़ुद उस का वा'दा है । चुनान्चे, पारह 26, सूरए मुह़म्मद की सातवीं आयत में इरशादे पाक है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَ يُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ۝۷

(پ۲۶،محمد:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *ऐ ईमान वालो ! अगर तुम* ***अल्लाह*** *के दीन की मदद करोगे, तो* ***अल्लाह*** *तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमाएगा ।*

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 932, मुलख़्ख़सन, नेकी की दा'वत, स. 520 ता 521)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मुख़्तसर तआ़रुफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मज़ीद ह़ालात व वाक़िआ़त जानने से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का तआ़रुफ़ सुनती हैं ।

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का नाम "**अ़ब्दुल्लाह**" कुन्यत "**अबू बक्र**" और "**सिद्दीक़**" व "**अ़तीक़**" आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के अल्क़ाबात हैं । सिद्दीक़ का मा'ना है बहुत ज़ियादा सच बोलने वाला, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ज़मानए जाहिलिय्यत ही में इस लक़ब से मशहूर हो गए थे क्यूंकि हमेशा सच बोलते थे और अ़तीक़ का मा'ना "**आज़ाद**" है । दोज़ख़ से बचाने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ख़ुश ख़बरी देते हुवे फ़रमाया : اَنْتَ عَتِيْقُ اللّٰهِ مِنَ النَّارِ तुम (**अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से) दोज़ख़ की आग से आज़ाद हो । इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का येह लक़ब हुवा ।

(تاریخ الخلفاء، فصل فی اسمہ ولقبہ، ص۲۹)

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कु़रैशी हैं और सातवीं पुश्त में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का शजरए नसब सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दिलबर, फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के रहबर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदानी शजरे से मिल जाता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ आ़मुल फ़ील (हाथी वाला साल या'नी जिस साल ना मुराद अबरहा बादशाह हाथियों के लश्कर के साथ का'बे पर ह़म्ला आवर हुवा था) के तक़रीबन अढ़ाई साल बा'द मक्के शरीफ़ में पैदा हुवे।

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वोह सह़ाबी हैं जिन्हों ने सब से पहले हर ऐ़ब से पाक नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की तस्दीक़ की। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इस क़दर अ़ज़ीम शख़्सिय्यत हैं कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द अगले और पिछले तमाम इन्सानों में सब से अफ़्ज़लो आ'ला हैं, आज़ाद मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया और ज़िन्दगी के हर मोड़ पर **अल्लाह** पाक की रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ दे कर वफ़ादारी का ह़क़ अदा किया। 2 साल, 7 माह ख़िलाफ़त के फ़राइज़ सर अन्जाम दे कर 22 जुमादल उख़रा, सिने 13 हि., पीर शरीफ़ का दिन गुज़ार कर वफ़ात पाई। अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रौज़ए मुबारक में गुनाहगारों पर शफ़्क़त फ़रमाने वाले नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए मुबारक में दफ़्न हुवे। (تاریخ الخلفاء،ص۶۲،۶۷،۸۱ملتقطاً)

सब से बड़े परहेज़गार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह पाक ने कु़रआने करीम में एक मक़ाम पर अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को परहेज़गार फ़रमाया। चुनान्चे, पारह 30, सूरतुल लैल की आयत नम्बर 17 में इरशाद होता है :

وَسَیُجَنَّبُہَا الْاَتْقَی ﴿۱۷﴾ (پ۳۰،اللیل:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : *और अ़न क़रीब सब से बड़े परहेज़गार को उस आग से दूर रखा जाएगा।*

बयान कर्दा आयते मुक़द्दसा में "اَتْقٰی" (या'नी सब से बड़ा परहेज़गार) से मुराद अमीरुल मोमिनीन, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه हैं ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** करीम की बारगाह में अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه को कितना बड़ा मक़ाम ह़ासिल है कि कई आयाते मुबारका आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه के ह़क़ में नाज़िल हुईं । इसी त़रह़ उम्मतियों पर रह़मो करम फ़रमाने वाले प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه का मक़ाम बहुत आ'ला था । चुनान्चे,

बारगाहे रिसालत में मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه से रिवायत है, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! लोगों में आप को सब से बढ़ कर कौन मह़बूब है ? **अल्लाह** करीम की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) । उन्हों ने दोबारा अ़र्ज़ किया : मर्दों में से कौन है ? फ़रमाया : आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) के वालिद । (صحیح البخاری، کتاب المغازی ،غزوۃ ذات السلاسل ،الحدیث:۴۳۵۸، ج۳، ص۱۲۶ مختصرا) (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि हम गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه के साथ खड़े थे, इतने में अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه ह़ाज़िर हुवे, तो हम गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आगे बढ़ कर उन से हाथ मिलाया फिर गले लगा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه का मुंह चूम लिया और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबुल ह़सन ! मेरे नज़दीक ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه का वोही मक़ाम है, जो **अल्लाह** करीम के हां मेरा मक़ाम है । (الریاض النضرۃ، ذکر منزلتہ...الخ، ج۱، ص۱۸۵)

सिद्दीके अक्बर का जन्नत में पुर तपाक इस्तिक़्बाल

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है, हर ऐ़ब से पाक आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत में एक ऐसा शख़्स दाख़िल होगा कि तमाम जन्नत वाले उसे पुकार पुकार कर कहेंगे : मरह़बा ! मरह़बा ! यहां तशरीफ़ लाइये, यहां तशरीफ़ लाइये । अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने बड़े तअ़ज्जुब से पूछा : या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम भी उस शख़्स को देख सकेंगे ? तो हम गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! वोह जन्नती शख़्स तुम ही तो हो । (ابن حبان، کتاب اخبارہ عن مناقب الصحابۃ، ذکر ترحیب اھل الجنۃ بابی بکر، ۶، جزء: ۹، ص۷، حدیث: ۶۸۲۸)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ किस क़दर खु़श नसीब सह़ाबी हैं कि अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम लोगों में सब से अफ़्ज़ल क़रार पाए और खु़श ख़बरियां सुनाने वाले प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ को जन्नत की खु़श ख़बरी इरशाद फ़रमाई । आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ को येह सआ़दत भी ह़ासिल है कि हर मक़ाम पर रह़मो करम फ़रमाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहे ह़त्ता कि अल्लाह पाक ने आसमानों में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ का नाम अपने सब से ज़ियादा पसन्दीदा रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम के साथ मिला दिया । जैसा कि :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत है, हर ऐ़ब से पाक नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे आसमानों की सैर कराई गई, पस मेरा जिस आसमान से गुज़र हुवा, मैं ने वहां अपना नाम लिखा हुवा पाया और अपने बा'द ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ का नाम भी लिखा हुवा पाया ।

(مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ماجاء فی ابی بکر، ۹/۱۹، حدیث: ۱۴۲۹۶، تاریخ الخلفاء، ذکر ابو بکر الصدیق، ص ۴۳)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से ख़ूब ख़ूब मह़ब्बतो अ़क़ीदत रखें ताकि अल्लाह करीम अपने प्यारे के सदके़ हम पर भी अपनी रह़मत की बारिशें फ़रमाए ।

ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़ाते बा बरकत को **अल्लाह** करीम ने बेहतरीन ख़ूबियों और पाकीज़ा किरदार का मालिक बनाया था। आइये ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के किरदारे मुबारक की चन्द झल्कियां सुनती हैं। चुनान्चे,

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़ात में लोगों के साथ भलाई और ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा कूट कूट कर भरा हुवा था। येही वज्ह थी कि दीने इस्लाम क़बूल करने की वज्ह से ज़ुल्मो सितम बरदाश्त करने वाले सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने रह़मत व मेहरबानी के दरया बहा दिये, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ज़ुल्मो सितम की चक्की में पिस्ने वाले मुसलमानों के लिये सिर्फ़ दिल में ही हमदर्दी के जज़्बात न रखते थे बल्कि उन्हें तक्लीफ़ों से नजात दिलाने के लिये कोशिश फ़रमाते, अगर इस काम के लिये माल भी ख़र्च करना पड़ता, तो इस से भी पीछे न हटते। आइये ! इस तअ़ल्लुक़ से एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की आज़ादी

अल्लाह पाक की रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत प्यारे और मश्हूर सह़ाबी, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सच्चे मोमिन और पाकीज़ा दिल ग़ुलाम थे। इन का मालिक उमय्या बिन ख़लफ़ इन्हें सख़्त धूप में ले जा कर मक्का से बाहर दहक्ती हुई रेत पर चित लिटा कर सीने पर एक बड़ा पथ्थर रख देता और कहता : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन) का इन्कार करो, हमारे ख़ुदाओं की इबादत करो, वरना यूंही मर जाओगे। ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सिर्फ़ येही जवाब देते : अह़द ! अह़द ! (या'नी **अल्लाह** पाक एक है, उस का कोई शरीक नहीं)। (الریاض النضرۃ، ذکر من اعتقہ...الخ، ۱/۱۳۳تا۱۳۴)

एक दिन अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उस जगह से गुज़रे जहां ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को

जुल्म का निशाना बनाया जा रहा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उमय्या बिन ख़लफ़ को डांटते हुवे कहा : इस मिस्कीन को सताते हुवे तुझे अल्लाह पाक से डर नहीं लगता ! कब तक ऐसा करता रहेगा ? वोह कहने लगा : अबू बक्र ! तुम ने ही इसे ख़राब (या'नी मुसलमान) किया है, तुम ही इसे छुड़ा लो। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मेरे पास ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से ज़ियादा तन्दुरुस्त व तवाना ग़ुलाम है, ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मुझे दे कर वोह तुम ले लो। कहने लगा : मन्ज़ूर है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कुछ रक़म और ग़ुलाम के बदले में इन्हें ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मज़ीद छे ऐसे ही ग़ुलाम आज़ाद किये। (الریاض النضرۃ، ذکر من اعتقہ...الخ، ۱/۱۳۴) येह भी मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते बिलाले ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को पांच ऊक़िय्या (या'नी तक़रीबन 32 तोले) सोना अदा कर के ख़रीदा। तो फ़रोख़्त करने वाले ने कहा : अबू बक्र ! अगर तुम सिर्फ़ एक ऊक़िय्या सोने पर अड़ जाते, तो मैं इतनी क़ीमत में ही इसे फ़रोख़्त कर देता। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : अगर तुम सौ ऊक़िय्या सोना मांगते, तो मैं वोह भी दे देता और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ज़रूर ख़रीद लेता। (الریاض النضرۃ، ۱/۱۳۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िए से मा'लूम हुवा ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मुसलमानों पर बहुत मेहरबान थे, किसी मोमिन को तक्लीफ़ में मुब्तला न देख पाते और अपने मालो सामान को उस की जान पर तरजीह़ देते थे। इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते बिलाले ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ समेत सात ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ नेक होने के साथ साथ नेक कामों में पहल करने वाले थे। चुनान्चे,

यारे ग़ार का माली ईसार

ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर जब अल्लाह पाक की रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत के

मालदारों को हुक्म दिया कि वोह अल्लाह पाक की राह में माली इमदाद के लिये बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें ताकि इस्लाम की ख़ातिर लड़ने वालों के लिये खाने, पीने और सुवारियों का इन्तिज़ाम किया जा सके। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाने वाले नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आलीशान पर अ़मल करते हुवे जिस हस्ती ने राहे ख़ुदा के लिये अपनी सारी दौलत बारगाहे रिसालत में पेश की, वोह सहाबिये रसूल, आ़शिक़े अक्बर, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने घर का सारा मालो सामान अल्लाह करीम की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों में ढेर कर दिया। हर ऐ़ब से पाक नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने यारे ग़ार के इस ईसार को देख कर पूछा : क्या अपने घर बार के लिये भी कुछ छोड़ा ? निहायत अदबो एह़तिराम से अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : اَبْقَیْتُ لَھُمُ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہٗ मैं अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िम्मए करम पर छोड़ आया हूं। (سبل الھدٰی والرشاد، ذکر حثہ علی النفقۃ...الخ، ۵/۴۳۵) गोया इरशाद फ़रमाया : मेरे और मेरे बाल बच्चों के लिये अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काफ़ी हैं।

मैं अपने रब्बे करीम से राज़ी हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : मैं उम्मत के ग़म में आंसू बहाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर था, वहां अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ऐसा लिबास पहने तशरीफ़ फ़रमा थे जिस में बटनों की जगह कांटे लगे हुवे थे। इतने में जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ऐसा लिबास क्यूं पहना हुवा है ? फ़रमाया : ऐ जिब्रईल ! इस ने अपना सारा माल फ़त्ह़े मक्का से पहले मुझ पर कुरबान कर दिया है। जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया, अल्लाह करीम आप पर सलाम भेजता है और फ़रमाता है : इन से

पूछिये कि वोह अल्लाह करीम से राज़ी हैं या नाराज़ ? अल्लाह करीम की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अबू बक्र ! अल्लाह करीम तुम्हें सलाम इरशाद फ़रमाता है और फ़रमाता है कि मुझ से राज़ी हो या नहीं ? अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : मैं अपने परवर दगार से नाराज़ कैसे हो सकता हूं ? मैं अपने रब्बे करीम से राज़ी हूं, मैं अपने रब्बे करीम से राज़ी हूं, मैं अपने रब्बे करीम से राज़ी हूं । (تاریخ مدینۃ دمشق،عبد اللہ ویقال عتیق، ۳۰/۷۱)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस रिवायत से जहां येह मा'लूम होता है कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का अल्लाह पाक की बारगाह में कैसा अ़ज़ीम मर्तबा है, वहीं येह भी पता चलता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ, अल्लाह पाक की राह में माल ख़र्च करने का कैसा आ'ला जज़्बा रखते थे ! यक़ीनन अल्लाह पाक की राह में माल ख़र्च करने के बहुत फ़ज़ाइल हैं । रब्बे करीम की ने'मतें तक़्सीम फ़रमाने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस मुसलमान ने किसी बे लिबास मुसलमान को कपड़ा पहनाया, अल्लाह पाक उसे जन्नती लिबास पहनाएगा और जिस ने किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाया, अल्लाह पाक उसे जन्नती फल खिलाएगा और जिस ने किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाया, अल्लाह पाक उसे मोहर लगी हुई पाकीज़ा शराब पिलाएगा ।

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، ۲/۱۸۰، حدیث: ۱۶۸۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

8 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी दौरा"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि बे लिबास मुसलमानों को लिबास पहनाना, भूकों को खाना खिलाना और प्यासों को पानी पिलाना कितनी बेहतरीन नेकियां हैं । आइये ! हम भी निय्यत करती हैं कि ग़रीबों की इमदाद करेंगी, भूकों को खाना खिलाएंगी, प्यासी इस्लामी बहनों को पानी पिलाएंगी ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه आशिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इन जैसे बे शुमार नेक आ'माल करने का ख़ूब ख़ूब ज़ेह्न दिया जाता है, लिहाज़ा आज बल्कि अभी से इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर 8 मदनी कामों में अ़मली त़ौर पर ह़िस्सा ले कर नेकी की दा'वत की धूमें मचा दीजिये ।

याद रहे ! ज़ैली ह़ल्क़े के 8 मदनी कामों में से एक मदनी काम "**मदनी दौरा**" भी है, जिस के ज़रीए़ इस्लामी बहनों को घर घर जा कर नेकी की दा'वत दी जाती है । हफ़्ते का कोई एक दिन मुक़र्रर कर के, जगह बदल बदल कर "**मदनी दौरा**" के ज़रीए़ नेकी की दा'वत की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । कम अज़ कम 7 इस्लामी बहनें (जिन में कम अज़ कम एक बड़ी उ़म्र वाली ज़रूर हों) अपने ज़ैली ह़ल्क़े या ह़ल्क़े के अत़राफ़ में (पर्दे की एह़तियात़ के साथ) घर घर जा कर 72 मिनट मदनी दौरा की तरकीब बनाएं । नेकी की दा'वत देना तो ऐसा अहम फ़रीज़ा है कि तमाम ही अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام बल्कि खु़द रह़मो करम फ़रमाने वाले मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी मक़्सद के लिये दुन्या में भेजा गया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस मदनी काम के बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद (Benefits) हैं : ❖ मदनी दौरे की बरकत से हर ऐ़ब से पाक प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नेकी की दा'वत देने वाली सुन्नत पर अ़मल हो जाता है । ❖ मदनी दौरे की बरकत से इस्लामी बहनों से मुलाक़ात व सलाम की सुन्नत आ़म होती है । ❖ मदनी दौरे की बरकत से इ़ल्मे दीन और नेकी की दा'वत से माला माल क़ीमती मदनी फूल उम्मते मुस्लिमा तक पहुंचाए जाते हैं । ❖ मदनी दौरे की बरकत से बे नमाज़ियों को नमाज़ी बनाने में बहुत मदद ह़ासिल होती है । ❖ मदनी दौरे की बरकत से दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की तश्हीर व नेक नामी होती है । लिहाज़ा आप भी मदनी कामों की ख़ूब ख़ूब धूमें मचाइये और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये । आइये ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी की एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये । चुनान्चे,

गुनाहों से नजात कैसे मिली ?

मुल्के अमीरे अहले सुन्नत में मुक़ीम एक इस्लामी बहन दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले नित नए फ़ैशन अपनाने, गाने, बाजे सुनने और बे पर्दगी जैसे गुनाहों में गिरिफ़्तार थीं नीज़ ग़ुस्सा और चिड़चिड़ापन भी उन की आदात में शामिल था । उन की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब कुछ यूं बरपा हुवा कि एक दिन दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता एक इस्लामी बहन ने उन्हें नेकी की दा'वत दी और इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे दा'वते इस्लामी के तहत होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत का ज़ेहन दिया । उन की ज़बान में ऐसी तासीर थी कि वोह इन्कार न कर सकीं और दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जा पहुंचीं । तिलावत व ना'त शरीफ़ के बा'द होने वाला सुन्नतों भरा बयान बड़ा दिल नशीन और पुर तासीर था फिर ज़िक्रुल्लाह की सदाओं और रो रो कर की जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआओं ने उन्हें बहुत मुतअस्सिर किया । इजतिमाअ़ में होने वाले **अल्लाह** के ज़िक्र से उन के दिल को बहुत सुकून मिला । वोह दिन और आज का दिन, वोह दा'वते इस्लामी वाली बन गईं । इस इजतिमाअ़ में शिर्कत से पहले مَعَاذَاللہ वोह बे पर्दगी जैसे गुनाह में गिरिफ़्तार थी मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से उन्हों ने मदनी बुरक़अ़ सजा लिया और अब तक اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इस पर इस्तिक़ामत ह़ासिल है ।

अगर आप को भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल के ज़रीए़ कोई मदनी बहार या बरकत मिली हो, तो आख़िर में ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को जम्अ़ करवा दें ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लाम की दा'वत का अन्दाज़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ वोह ख़ुश नसीब सह़ाबी हैं जो मर्दों में सब से

पहले ईमान लाए। मशहूर सीरत निगार, ह़ज़रते इब्ने इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इस्लाम लाते ही इस का इज़्हार भी फ़रमा दिया और इस की दा'वत भी देना शुरूअ़ कर दी। चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी क़ौम में निहायत ही नर्म दिल, लोगों के दुख, दर्द में शरीक होने वाले और सब की पसन्दीदा शख़्सिय्यत थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ क़ुरैश की ख़ानदानी शराफ़त व मक़ाम और उन की हर अच्छाई, बुराई को अच्छी त़रह़ जानते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ एक मशहूर और ख़ुश अख़्लाक़ ताजिर भी थे। क़ुरैश के तमाम छोटे, बड़े लोग इल्मी व तिजारती ख़ूबियों और पाकीज़ा सोह़बत के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सोह़बत से फ़ैज़याब होते, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उन पर इनफ़िरादी कोशिश करते, इस्लाम की ख़ूबियां बयान फ़रमाते और उन्हें इस्लाम की दा'वत देते, इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने पास आने वाले कई लोगों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी इस्लाम में दाख़िल कर लिया। (الریاض النضرۃ، الفصل الخامس فی ذکر من...الخ، ۱/۹۱) चुनान्चे,

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले "**बुड्ढा पुजारी**" के सफ़ह़ा नम्बर 11 पर फ़रमाते हैं : आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इनफ़िरादी कोशिश से पांच वोह ह़ज़रात इस्लाम लाए जिन का शुमार अ़शरए मुबश्शरा में होता है। (याद रहे ! हर ऐब से पाक नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वोह दस अस्ह़ाब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जिन के जन्नती होने की दुन्या में ख़बर दे दी गई उन्हें "**अशरए मुबश्शरा**" कहते हैं। (बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अहले सुन्नत, स. 76, मुलख़्ख़सन)

उन के मुबारक नाम येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (2) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (3) ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (4) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (5) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ।

घर में मस्जिद की ता'मीर

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इस्लाम की इब्तिदा में अपने घर के सेह़न में

एक मस्जिद बनाई थी जहां वोह कुरआने पाक की तिलावत करते और नमाज़ पढ़ा करते थे, लोग आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के इस ईमान को ताज़गी बख़्शने वाले मन्ज़र को देख कर आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के आस पास जम्अ हो जाते, आप رَضِیَ اللهُ عَنْه की तिलावते कुरआन, इबादत और ख़ौफ़े ख़ुदा में रोना लोगों को बहुत मुतअस्सिर करता था। आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के इस अ़मल के सबब भी कई लोग इस्लाम में दाख़िल हुवे। (الریاض النضرۃ، الفصل الخامس فی ذکر من...الخ، ۱/۹۲)

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : मेरे वालिदे माजिद رَضِیَ اللهُ عَنْه जब कुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते, तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه को अपने आंसूओं पर इख़्तियार न रहता, या'नी बहुत ज़ियादा रोने लगते। (شعب الایمان، الحادی عشر من شعب الایمان، ۱/۴۹۳، حدیث: ۸۰۶)

तिलावत में रोना करे सवाब है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه कुरआने करीम की तिलावत करते हुवे किस क़दर आंसू बहाते थे, ह़ालांकि आप رَضِیَ اللهُ عَنْه को दुन्या में ही अल्लाह पाक की रह़मत बन कर तशरीफ़ लाने वाले आक़ा صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से जन्नती होने की खुश ख़बरी मिल गई थी, इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते थे। हमें भी कुरआने पाक की तिलावत करते हुवे रोना चाहिये और अगर रोना न आए, तो रोने जैसी सूरत ही बना लेनी चाहिये क्यूंकि कुरआने करीम की तिलावत करते हुवे रोना एक बेहतरीन अ़मल है। जैसा कि :

अपनी उम्मत के ग़म में आंसू बहाने वाले नबी صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : कुरआने पाक की तिलावत करते हुवे रोया करो और रोना न आए, तो रोने की सी सूरत बना लो।

(ابن ماجہ، باب فی حسن الصوت، ۲/۱۲۹، حدیث: ۱۳۳۷ ملتقطا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

गर्मियों में रोजे़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कसरत से इ़बादत किया करते थे, इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कसरत से रोजे़ भी रखा करते थे। जैसा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बारे में आता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ गर्मियों में (नफ़्ल) रोजे़ रखते और सर्दियों में छोड़ देते थे। (الزهد للامام احمد، کتاب الزهد، زهد أبي بکر صديق، ص١٤١، حديث: ٥٨٥)

वाके़ई येह अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का ज़ौके़ इ़बादत था कि कुरआने करीम की तिलावत करते हुवे रोते और फ़र्ज़ रोज़ों के इ़लावा गर्मियों में नफ़्ल रोजे़ रखते। अगर आज हम अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें, तो सर्दियों में फ़र्ज़ रोज़ों में भी सुस्ती करती हैं, ह़ालांकि सर्दियों में उ़मूमन दिन बहुत छोटे और रातें बहुत लम्बी होती हैं और दिन में प्यास भी बहुत कम लगती है जब कि गर्मियों में उ़मूमन दिन बहुत लम्बा और रातें बहुत छोटी होती हैं और दिन में प्यास की शिद्दत भी ज़ियादा होती है। यक़ीनन येह दुन्या की गर्मी, आख़िरत की गर्मी के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं कि जब क़ियामत का दिन होगा और सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, शिद्दते प्यास से ज़बानें बाहर निकल रही होंगी, लोग अपने ही पसीने में नहा रहे होंगे, उस वक़्त की गर्मी बरदाश्त करना यक़ीनन हमारे बस में नहीं। लिहाज़ा दुन्या में ही रब्बे करीम की रिज़ा के लिये अच्छे आ'माल करने की कोशिश करनी चाहिये, **अल्लाह** करीम और हम गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم को मना लीजिये, क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक की रह़मत से अ़र्श का साया पाने के लिये आज दुन्या ही में नेकियों की कसरत करनी होगी।

आइये ! येह मदनी सोच पाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रह कर अ़मली त़ौर पर शामिल हो कर नेकियों का ज़ख़ीरा जम्अ़ करते हुवे राहे आख़िरत के लिये सामाने आख़िरत जम्अ़ कीजिये।

मजलिसे मदनी मुज़ाकरा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी दुन्या भर में ख़िदमते दीन के कमो बेश 107 शो'बाजात में सुन्नतों की धूमें मचा रही है, जिन में से एक शो'बा "**मजलिसे मदनी मुज़ाकरा**" भी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने "**इल्म बे शुमार ख़ज़ानों का मजमूआ़ है, जिन के हुसूल का ज़रीआ़ सुवाल है**" के क़ौल को अ़मली जामा पहनाते हुवे सुवाल व जवाब का एक सिलसिला शुरूअ़ किया है, जिसे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में "**मदनी मुज़ाकरा**" कहा जाता है ।

आ़शिक़ाने रसूल मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, मआ़शी व मुआ़शरती व तन्ज़ीमी मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त (Topics) के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुवे जवाबात से नवाज़ते हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه मजलिसे मदनी मुज़ाकरा के तह़्त शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसलमानों को महकाने के लिये इन मदनी मुज़ाकरों को तह़रीरी रिसालों, VCD's और मेमोरी कार्डज़ की सूरत में पेश करने की कोशिशें जारी हैं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की सीरत का एक रौशन पहलू येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه पड़ोसियों के ह़क़ में निहायत नर्म दिल थे । जैसा कि :

पड़ोसी से झगड़ा मत करो !

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं : एक बार अमीरुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के पास से गुज़रे, तो वोह अपने पड़ोसी को डांट रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने उन से फ़रमाया : अपने पड़ोसी के साथ झगड़ा मत करो क्यूंकि येह तो यहीं रहेगा लेकिन जो लोग तुम्हारी लड़ाई को देखेंगे, वोह यहां से चले जाएंगे।

(کنزالعمال، کتاب الصحبۃ، باب فی حقوق تتعلق بصحبۃ الجار، الجزء: ۵، ۹/۷۹، حدیث: ۲۵۵۹۹)

पड़ोसी के हुक़ूक़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि अमीरुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने पड़ोसी के साथ झगड़ने वाले शख़्स को किस क़दर अच्छे अन्दाज़ में नेकी की दा'वत पेश की। इस में हमारे लिये भी बहुत से मदनी फूल मौजूद हैं, वाक़ेई जब पड़ोसनें आपस में किसी बात पर झगड़ती हैं, तो इस में उन का अपना ही नुक़्सान होता है क्यूंकि लड़ाई के बा'द भी उन्हें एक साथ ही रहना है और उन का आपस में झगड़ा करना दीगर देखने वालियों के लिये तमाशा बन जाता है।

याद रहे ! इस्लाम में पड़ोसी (Neighbour) के हुक़ूक़ की बहुत अहम्मिय्यत है। चुनान्चे, **अल्लाह** पाक की रहमत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले, पड़ोसियों के हुक़ूक़ अदा करने की तरग़ीब दिलाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं तुम्हें पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करने की वसिय्यत करता हूं। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने पड़ोसियों के इस क़दर हुक़ूक़ बयान फ़रमाए कि ऐसे लगा जैसे आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم उसे विरासत में हिस्सा दार बना देंगे।

(معجم الکبیر، محمد زیاد الالہانی عن ابی امامۃ، الحدیث: ۷۵۲۳، ج۸، ص۱۱۱)

अल्लाह करीम हमें भी पड़ोस की इस्लामी बहनों का ख़ूब ख़याल रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के फ़रामीन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने जिस त़रह़ अपने किरदार के ज़रीए़ लोगों की इस्लाह़ फ़रमाई, इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने नसीह़त आमोज़ फ़रामीन के ज़रीए़ भी नेकी की दा'वत दे कर उम्मत की रहनुमाई फ़रमाई। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर था। मैं ने अ़र्ज़ की : आप मुझे नसीह़त फ़रमाएं। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने दो बार फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुम पर रह़म करे और बरकत दे। (फिर फ़रमाया) : (1) फ़र्ज़ नमाज़ें वक़्त पर अदा किया करो। (2) ज़कात ख़ुशी से दिया करो। (3) रमज़ान के रोज़े रखो। (4) बैतुल्लाह का ह़ज करो और (5) कभी ह़ाकिम न बनो। मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आज कल तो हुक्मरान ही उम्मत के बेहतरीन लोग हैं। इरशाद फ़रमाया : आज कल हुक्मरानी आसान है लेकिन मुझे येह डर है कि आइन्दा ज़माने में फ़ुतूह़ात की ज़ियादती के सबब हुकूमतें भी ज़ियादा होंगी और इस त़रह़ मुमकिन है कि ना अहल हुक्मरान भी आएंगे जब कि क़ियामत के दिन ह़ाकिम का ह़िसाब लम्बा होगा और अ़ज़ाब ज़ियादा जब कि ग़ैरे ह़ाकिम का ह़िसाब कम और अ़ज़ाब हल्का, इस लिये कि हुक्मरान ही से ज़ियादा ज़ुल्म होता है और ज़ालिम ह़ाकिम, **अल्लाह** पाक के वा'दे को तोड़ देता है। इन्ही हुक्मरानों में से (अ़द्लो इन्साफ़ करने वाले) बा'ज़ **अल्लाह** पाक के मुक़र्रब भी होते हैं और बा'ज़ (ज़ुल्मो सितम के सबब) बारगाहे इलाही से धुत्कारे हुवे हैं। **अल्लाह** पाक की क़सम ! तुम में से जब कोई शख़्स पड़ोसी की बकरी या ऊंट क़ब्ज़े में कर ले, तो बड़ा ख़ुश होता है कि मैं ने पड़ोसी की बकरी या ऊंट पकड़ लिया है, ह़ालांकि ऐसों पर अ़ज़ाब उतारना **अल्लाह** पाक का ज़ियादा बड़ा ह़क़ है।

(شعب الایمان، فصل فی ذکر ما ورد من التشدید، ۶/۵۱، حدیث: ۷۴۷۲، الریاض النضرۃ، ذکر ما یدل علی...الخ، ۱/۲۵۳)

नफ़्ल रोज़ों की मदनी तह़रीक

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी में **नफ़्ल रोज़ों की मदनी तह़रीक** बिल ख़ुसूस मदनी इन्आ़मात वालों के ज़रीए जारी रहती है। आइये ! नफ़्ल रोज़ों के बारे में चन्द मदनी फूल सुनती हैं।

नफ़्ल रोज़ों के बारे में चन्द मदनी फूल

1. **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : अगर किसी ने एक दिन नफ़्ल रोज़ा रखा और ज़मीन भर सोना उसे दिया जाए, जब भी इस का सवाब पूरा न होगा, इस का सवाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा।

(مسند ابی یعلی، ج۵، ص۳۵۳، حدیث ۶۱۰۴)

2. **रोज़े से मह़ब्बत करने वालियों की तन्ज़ीमी दरजा बन्दी :**

❖ **मुमताज़ :** जो सौमे दावूदी या'नी एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखे या महीने में कम अज़ कम 15 रोज़े अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ रखे या 5 मम्नूआ़ दिनों के इ़लावा सारा साल रोज़े रखे। (ई़दुल फ़ित्र और 10, 11, 12, 13 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को रोज़ा रखना **"मक्रूहे तह़रीमी"** है)

(دُرِّمختار و ردالمحتار ج۳، ص۳۹۱)

❖ **बेहतर :** जो हर पीर शरीफ़ और जुमा'रात का रोज़ा रखे (पीर और जुमा'रात का रोज़ा सुन्नत है, अलबत्ता जो अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ मदनी माह में 7 रोज़े रख ले, उस का भी तन्ज़ीमी त़ौर पर **बेहतर** में शुमार होगा)।

❖ **मुनासिब :** जो हर पीर शरीफ़ को या मजबूरी हो, तो किसी और दिन रोज़ा रखे (यूं महीने में 4 / 5 रोज़े होंगे)।

3. **याद रखिये** ! नफ़्ल रोज़ा जान बूझ कर शुरूअ़ करने से पूरा करना वाजिब हो जाता है, तोड़ने से क़ज़ा वाजिब होगी। (دُرِّمختار ج۳، ص۴۷۳)

4. मां-बाप अगर बेटे को नफ़्ल रोज़े से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का ख़त़रा है, तो वालिदैन की फ़रमां बरदारी करे। (ردالمحتار ج۳، ص۴۷۸)

5. शौहर की इजाज़त के बिग़ैर बीवी नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती।

(درمختار ج ۳، ص ۴۷۷)

नोट : नफ़्ल रोज़ों की मदनी तह़रीक में शामिल होने वाली इस्लामी बहनें मजलिसे मदनी इन्आ़मात से राबित़ा फ़रमाएं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الفصل الثانی، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाथ मिलाने के चन्द मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले बनाम "**101 मदनी फूल**" से हाथ मिलाने के चन्द मदनी फूल सुनती हैं :

❖ दो इस्लामी बहनों का ब वक़्ते मुलाक़ात सलाम कर के दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा करना या'नी दोनों हाथ मिलाना सुन्नत है। ❖ हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये : يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُم (या'नी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए)। ❖ दो मुसलमान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ़ मांगेंगी اِنْ شَآءَ الله क़बूल होगी, हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी। (مسند امام احمد، ۴/ ۲۸۶ حدیث: ۱۲۴۵۴) ❖ आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है। ❖ मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा रुकावट न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 98)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد